# शोध–पत्र

## ''श्रीरामचरितमानस एवं श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शैक्षिक मूल्यों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता – एक अध्ययन''

**शोधकर्त्री**
**पीयूष किरण माथुर**

**मार्गदर्शिका**
**डॉ. सावित्री सिंगवाल**

**प्रस्तावना –**

**मुनि वेद व्यास की पावन वाणी, लीला प्रभु की जिसने जानी।**
**सब पापों को धोने वाली, सरिता है ये भक्तिज्ञान की।।**
**शुक्रदेव मुनि ने जिसको गाया, कलयुग में यह मार्ग बताया।**
**हरि चरणों में शरण दिलाती, नौका है, बैकुण्ठ धाम की।।**
**मोह ममता को दूर हटाती, सबको प्रभु का मार्ग दिखाती।**
**भव बन्धन से मुक्त कराती, नौका ऐसी महाप्रयाण की।।**

महाभारत हिन्दुओं का प्रमुख काव्य ग्रंथ हैं। रामायण को संस्कृत साहितय का आदिकाव्य कहा जाता है तथा महाभारत को इतिहास ग्रंथ। यह विश्व साहित्य का विशाल ग्रंथ है। इसकी मुख्य घटना कौरवों और पाण्डवों का युद्ध हैं। महाभारत का सर्वश्रेष्ठ भाग श्रीमद्भगवद्गीता है जिसमें श्रीकृष्ण अर्जुन को जीवन का पूर्ण दर्शन बोध करवाते हैं। महाभारत सत्यवती और पाराशर के पुत्र श्रीकृष्ण द्वैपायन वेद व्यास द्वारा रचित हैं।

**त्रिभिर्वर्षैः सदोत्थायी कृष्णद्वैपायनो मुनि।**
**महाभारतमाख्यानं कृतवानिदमद्भुतम्।।**

तीन वर्ष तक सतत अथक परिश्रम करके वेदव्यास ने महाभारत की रचना की। यह 18 पर्वों में विभाजित है। इसमें कौरव–पाण्डव युद्ध के वर्णन के साथ मानव जीवन के सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, नैतिक व आर्थिक पक्षों से सम्बन्धित विषयों का

समावेश भी हैं। यह वीरकाव्य से विश्वकोष बन कर पंचम वेद की संज्ञा को प्राप्त कर गया। इसमें एक लाख श्लोक हैं। श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत का ही एक हिस्सा हैं जिसमें 18 अध्याय और 700 श्लोक है। श्रीमद्भगवद्गीता की गणना प्रस्थानत्रयी में की जाती है जिसमें उपनिषद् और ब्रमहसूत्र भी सम्मिलित हैं। भारतीय परम्परा के अनुसार श्रीमद्भगवद्गीता का वही स्थान है जो उपनिषद और धर्मसूत्रों का है। उपनिषदों को गौ और श्रीमद्भगवद्गीता को उसका दुग्ध कहा गया हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में ज्ञानयोग, कर्मयोग और भक्तियोग का वर्णन है। यह कुरूक्षेत्र के युद्ध में श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया दिव्य उपदेश है।

श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत का एक अध्याय है। उसका आरंभ अर्जुन के उस क्षोभक वर्णन से होता है, जो एक दूसरे के वध के लिए दोनों ओर खड़े योद्धाओं को देखकर उसके मन में हो उठा था और इसी दृश्य के अन्दर हिन्दू धर्म का प्रतिपादन सन्निविष्ट किया गया है। हमें श्रीमद्भगवद्गीता को हिन्दू धर्म का एक अपूर्व ग्रंथ मानना चाहिए, कुरूक्षेत्र के युद्ध की एक अवान्तर कथा मात्र नहीं।

श्रीमद्भगवद्गीता एक सार्वभौमिक सत्य के विश्लेषण को उजागर करती है जो हर परिस्थिति, देशकाल के लिए आवश्यक समाज, शिक्षा, धर्म व राजनीति के स्वरूप को प्रतिपादित करती है। श्रीमद्भगवद्गीता उनको सही संदर्भों में परिभाषित कर नये प्रतिमान स्थापित कर अग्रसरित करने में सक्षम है। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए शोधार्थी ने श्रीमद्भगवद्गीता व श्रीरामचरितमानस में निरूपित विभिन्न शैक्षिक मूल्यों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करने का प्रयास किया है। श्रीमद्भगवद्गीता व श्रीरामचरितमानस ऐसे महत्वपूर्ण ग्रंथ है जिन्होंने दर्शन, तत्व विद्या, नीतिशास्त्र तथा मानवीय आदर्श को अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचा दिया है। भारत जिस गौरवशाली सम्पदा का उत्तराधिकारी रहा है वह कितनी समृद्ध है, यह आज अधिकांश भारतीय भूल चुके है। हमें राह दिखाने वाला कोई पथ प्रदर्शक प्रकाश स्तम्भ दिखाई नहीं देता।

प्राचीन संस्कृति टूट रही है, नैतिक मानदण्ड नष्ट हो रहे हैं। सम्पूर्ण वातावरण में उत्तेजना व्याप्त है, चहुँ ओर उथल–पुथल मची है। सम्पूर्ण संस्कृति पर संकट उपस्थित है। ऐसे में मानस और श्रीमद्भगवद्गीता के मूल्य जनमत को आप्लावित कर सकते हैं। आपसी संघर्ष के स्थान पर एक दूसरे को संबल प्रदान कर सकते है। जीवन जीने की सही कला सिखा सकते हैं आवश्यकता है तो सिर्फ इस बात की इनमें निहित शैक्षिक मूल्यों का व्यापक दृष्टिकोण से विश्लेषण किया जाए। श्रीमद्भगवद्गीता व श्रीरामचरितमानस हमारे धर्म ग्रंथों के तेजस्वी एवं निर्मल हीरे है। ब्रह्मण्ड ज्ञान एवं आत्म विद्या के गूढ़ और पवित्र तत्वों को थोड़े में एवं स्पष्ट रीति से समझाने वाले, मनुष्य मात्र की पुरुषार्थ से पहचान करा देने वाले, भक्ति और ज्ञान का मेल कराकर इन दोनों का शास्त्रोक्त व्यवहार के साथ संयोग करा देने वाले, संसार में व्यस्त मनुष्य को शांति देकर उसे निष्काम कर्तव्य के आचरण में लगाने वाले श्रीमद्भगवद्गीता व श्रीरामचरितमानस के समान ग्रंथ संसार के साहित्य में नहीं मिलते। जिस ग्रंथ में समस्त विद्याओं का सार स्वयं भगवान श्रीकृष्ण की वाणी से मुखरित हुआ हो उसकी योग्यता का वर्णन किसी लेखनी से भला कैसे सम्भव है।

श्रीमद्भगवद्गीता केवल भारत में ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व के लिए कर्तव्य शास्त्र का अनूठा ग्रंथ रत्न है। इसमें जगद्गुरू के रूप में श्रीकृष्ण के द्वारा शिष्य के प्रतीक रूप में अर्जुन को शिक्षा दी गई है। मानव जीवन की इतनी उच्च कल्पना एवं कर्तव्य का इतना उच्च विश्लेषण अन्यत्र प्राप्त नहीं होता। वेद वेदान्त में अर्थात् प्राचीन उपनिषदों में मंत्र दृष्टा ऋषियों द्वारा जिस गूढ़ गम्भीर तत्वचिंतन की मीमांसा हुई उन सबका निचोड श्रीमद्भगवद्गीता में अन्यन्त व्यवस्थित ढंग से संकलित संगृहित है। भगवान श्रीकृष्ण के मुखाम्भोज से निसृत इस ज्ञान समुद्र में श्रीमद्भगवद्गीता का भारतीय संस्कृति में महत्व एवं प्रयोग आज भी अक्षुण्ण बना हुआ है। वस्तुतः

श्रीमद्भगवद्गीता में कोई एक दर्शन नहीं है, समस्त प्राचीन औपनिषदिक दर्शनों का सारांश इसमें हैं।

**आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्प्रदाम्**

**लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्।।**

श्रीराम वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अत्यधिक प्रासंगिक है क्योंकि उनकी कार्यप्रणाली का दूसरा नाम प्रजातंत्र है। श्रीराम यानि संस्कृति, धर्म, राष्ट्रीयता और पराक्रम। तत्व, आदर्श, नियम और धारणा का दूसरा नाम श्रीराम है। नर से नारायण कैसे बना जाए यह उनके जीवन से सीखा जा सकता है। एक तरफ उनका आदर्श हमारे मन को जीवन की ऊँचाईयों पर पहुँचाता है वहीं दूसरी तरफ उनकी नैतिकता मानव मन को सकारात्मक ऊर्जा देती है। उनका हर कार्य हमारे विवेक को जगाता है और हमारा आत्मविश्वास बढ़ाता है। रामचरितमानस की एक बड़ी सीख है विविधता में एकता। इस महाकाव्य में राजा दशरथ की तीनों रानियों और चारों पुत्रों का चरित्र अलग–अलग होता है लेकिन विविधता के बावजूद उनमें एकजुटता होती है। यह हर परिवार के लिए दुःख के समय से बाहर निकलने की सीख है।

रामचरितमानस से हमें अच्छी संगति का महत्व पता चलता है। कैकेयी राम को अपने पुत्र भरत से ज्यादा चाहती थी लेकिन दासी मंथरा की बातों में और गलत सोच में आकर वह राम के लिए 14 वर्षों का वनवास माँग लेती है। जिससे हमें सीख मिलती है कि हमें अच्छी संगति में रहना चाहिए ताकि नकारात्मकता हम पर हावी न हो।

रामचरितमानस में समाहित जीवन मूल्यों को हृदयंगम करने से दृष्टिकोण बदलता है, उत्कृष्टता का गहरा समावेश होता है, कर्तव्य में आदर्शवादी प्रक्रिया जुड़ती

है। लोभ, मोह, आधि, व्याधि से ग्रस्त जीवन को एक नया स्वरूप मिलता है। रामचरितमानस सर्वांगपूर्ण धर्म ग्रंथ है जिसमें मानव जीवन को सुखी समुन्नत तथा मुक्त बनाने वाले सभी सिद्धान्तों का समावेश है। जीवन के प्रत्येक आवश्यक एवं उपयोगी पहलू की विवेचना मानस में हुई है।

**समस्या कथन –**

**''श्रीरामचरितमानस एवं श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शैक्षिक मूल्यों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता – एक अध्ययन''**

**शोध के उद्देश्य –**

1. श्रीरामचरितमानस एवं श्रीमद्भगवद्गीता के शैक्षिक मूल्यों का गहन अध्ययन करना।
2. श्रीरामचरितमानस एवं श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शैक्षिक मूल्यों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।
3. श्रीरामचरितमानस व श्रीमद्भगवद्गीता के नैतिक मूल्यों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रांसगिकता जानना।
4. श्रीरामचरितमानस व श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित मानवीय कर्तव्यों व आदर्शों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता जानना।
5. श्रीरामचरितमानस व श्रीमद्भगवद्गीता के उपदेशों के आधार पर सुझाव प्रस्तुत करना।

**शोध विधि –**

प्रस्तुत शोधकार्य में श्रीरामचरितमानस एवं श्रीमद्भगवद्गीता के संदर्भ में विद्वानों व विचारकों द्वारा लिखित भाष्यों व टीकाओं तथा साहित्यों के अध्ययन को आधार बनाकर दार्शनिक सर्वेक्षणयुक्त अध्ययन किया जाएगा। जिसमें श्रीरामचरितमानस व

श्रीमद्भगवद्गीता के शैक्षिक मूल्यों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन किया जाएगा।

**निष्कर्ष –**

श्रीमद्भगवद्गीता एवं रामचरितमानस के शैक्षिक मूल्यों का विस्तृत विवेचन तथा अध्ययन करने के पश्चात् शोधकर्त्री को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता सम्बन्धी जो निष्कर्ष प्राप्त हुए वे निम्नलिखित हैं –

1. श्रीरामचरितमानस एवं श्रीमद्भगवद्गीता की शिक्षाओं की वर्तमान समय में अत्यन्त आवश्यकता एवं उपयोगिता है।
2. ज्ञान से ही मुक्ति संभव है अतः मनुष्य को ज्ञानी पुरुषों की संगति में रहना चाहिए। सांसारिक बंधनों से छूटने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान आवश्यक है क्योंकि ईश्वर से जोड़ता है।
3. मनुष्य को अहंकार त्याग देना चाहिए क्योंकि अहंकार से ईश्वर की प्राप्ति असंभव है। तन, मन को शुद्ध रखना और वाणी पर संयम रखना चाहिए। सांसारिक सुखों के पीछे दौड़ना व्यर्थ है क्योंकि ये क्षणिक होते है। प्रभु की कृपा से दिव्य ज्ञान की प्राप्ति होती है और अज्ञानता का नाश होता है। काम, क्रोध, लोभ व मोह का त्याग सफल जीवन के लिए आवश्यक है।
4. जातस्य हि ध्रुवो मृत्युध्रुवं जन्म मृतस्य च।
   तस्माद परिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।।
   पैदा हुए की मृत्यु अवश्य होगी और मृत्यु हुए का जन्म जरूर होगा अतः इस विषय में शोक नहीं करना चाहिए। बुद्धिमान व्यक्ति जीवित अवस्था में ही पाप और पुण्य का त्याग कर देता है। विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृह। निर्ममो निरहंकारः स शान्ति मधि गच्छति।। जो मनुष्य सम्पूर्ण कामनाओं का त्याग करके स्पृहारहित, ममतारहित और अहंतारहित होकर आचरण करता है वह शांति को प्राप्त होता है।

5. ईश्वर के तीन स्वरूप होते हैं – निराकार, साकार और अवतार। लोक मंगल के लिए प्रादुर्भूत महान अभियानों एवं आदर्शवादी क्रिया–कलाप द्वारा जन साधारण का मार्गदर्शन करने हेतु ईश्वर विभिन्न अवतार लेते है। ''जग मंगल गुन–ग्राम राम के, दानि मुकुल धन धरम धाम के'' भगवान राम के गुण समूह संसार में सब प्रकार मंगल देने वाले हैं। उनसे मुक्ति, धन, धर्म और सद्गति प्राप्त हो सकती है। ईश्वर भक्ति द्वारा मन की मलीनता जिस मात्रा में घटती जाती है, उसी अनुपात में विवेकशीलता दूरदर्शिता बढ़ती जाती है।

6. रामचरितमानस में निहित शिक्षक व शिक्षार्थी के गुणों, पाठ्यक्रम व शिक्षण विधियों को ही अपनाना चाहिए जिससे सम्पूर्ण उद्देश्यों की प्राप्ति सरलता से हो सके। रामचरितमानस में निहित सामाजिक व नैतिक मूल्यों के आधार पर ही जीवन को विकसित करना चाहिए। मानवीय मूल्यों आज्ञापालन, त्याग, बलिदान, धर्म का पालन, वचन का पालन, बड़ों की आज्ञा का पालन आदि कर्तव्यों का निर्वतन करना चाहिए।

**उपसंहार –**

श्रीमद्भगवद्गीता व श्रीरामचरितमानस में बताये गये जीवन आदर्शों, जीवन मूल्यों को हम अपने जीवन में अपना ले तो सभी समस्याऐं हल हो सकती है। परिवार, समाज और देश में व्याप्त आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक समस्याओं का समाधान हमें श्रीमद्भगवद्गीता व रामचरितमानस का अध्ययन करके प्राप्त हो सकता है। आज अत्यन्त आवश्यकता है इनके शैक्षिक मूल्यों को पाठ्यक्रम में जोड़ने की। विद्यार्थी ही देश का भावी कर्णधार होता है। वह शिक्षा के माध्यम से इन आदर्शों व सिद्धान्तों से लाभान्वित होकर अपने परिवार, समाज व देश को खुशहाल बना सकता है।

अतः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि रामचरितमानस एवं श्रीमद्भगवद्गीता के शैक्षिक मूल्यों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता है क्योंकि इन मूल्यों द्वारा आधुनिक जीवन की तनावपूर्ण स्थिति, व्यस्तता और प्रतिकूल समस्याओं से

मुक्ति प्राप्त की जा सकती है। विपरीत परिस्थितियों में सकारात्मक चिंतन तथा निर्णय क्षमता विकसित की जा सकती है।

## संदर्भ ग्रंथ

1. गोयनका जयदयाल (1930), ''रामायण में आदर्श भ्रातृ प्रेम कल्याण श्रीमद्भगवद्गीताप्रेस
2. गोस्वामी चिमनलाल (1972), ''रामांक'' कल्याण श्रीमद्भगवद्गीता प्रेस गोरखपुर
3. वर्मा पद्मिनी (1997), ''श्रीमद्भगवद्गीता के शिक्षा दर्शन का आधुनिक भारतीय शिक्षा के संदर्भ में एक समीक्षात्मक अध्ययन।''
4. गोस्वामी तुलसीदास (1965), श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर।
5. पटेल, प्रफुल्ल एम. (2013), श्रीरामचरितमानस का वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन।
6. रैना, शीला (2015), श्रीरामचरितमानस व रामावतार चरित का तुलनात्मक अध्ययन।
7. स्वामी रामसुख दास, मानव में नाम वन्दना।
8. मालवीय राजीव (2006), श्रीमद्भगवद्गीता में सन्निहित शैक्षिक मूल्यों एवं शैक्षिक नियोजन के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन।
9. राधेश्याम खेमका, कल्याण (रामभक्ति अंक)
10. सिंह अमिता रानी, रामचरितमानस में जीवन मूल्य
11. चरणदास शर्मा, तुलसीदास के काव्य में नैतिक मूल्य।
12. सिंघल, आरती (2013), ''आधुनिक भारतीय परिप्रेक्ष्य में श्रीमद्भगवद्गीता का शैक्षिक निहितार्थ एवं एवं उसकी प्रासंगिकता का एक आलोचनात्मक अध्ययन।''
13. चक्रवर्ती बी. (1991), रामचरितमानस में मानव मूल्य।
14. पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, रामायण की प्रगतिशील प्रेरणाएँ।

15. मो. इकरार अहमद (2014), रामचरितमानस में निहित शैक्षिक विचारों का विवेचनात्मक अध्ययन तथा वर्तमान शिक्षा में उनकी प्रासंगिकता।

16. स्वामी प्रभुनाथ, श्रीमद्भगवद्गीता यथा रूप इस्कान मंदिर नोएडा

17. किरण शर्मा (2015), गीता में कर्मयोग।